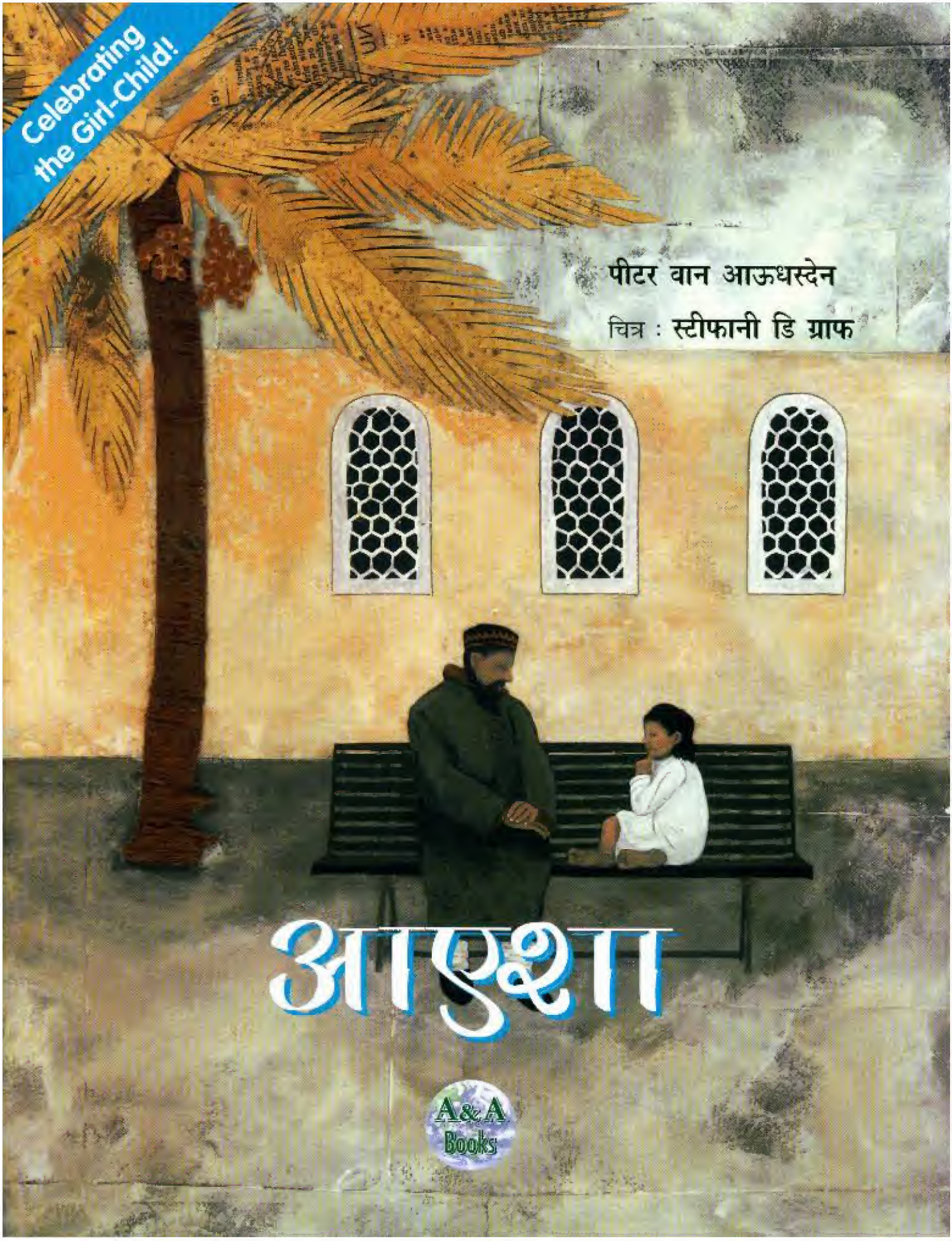

Celebrating the Girl-Child!
पीटर वान आऊधस्देन
चित्र : स्टीफानी डि ग्राफ
आइशा
A&A Books

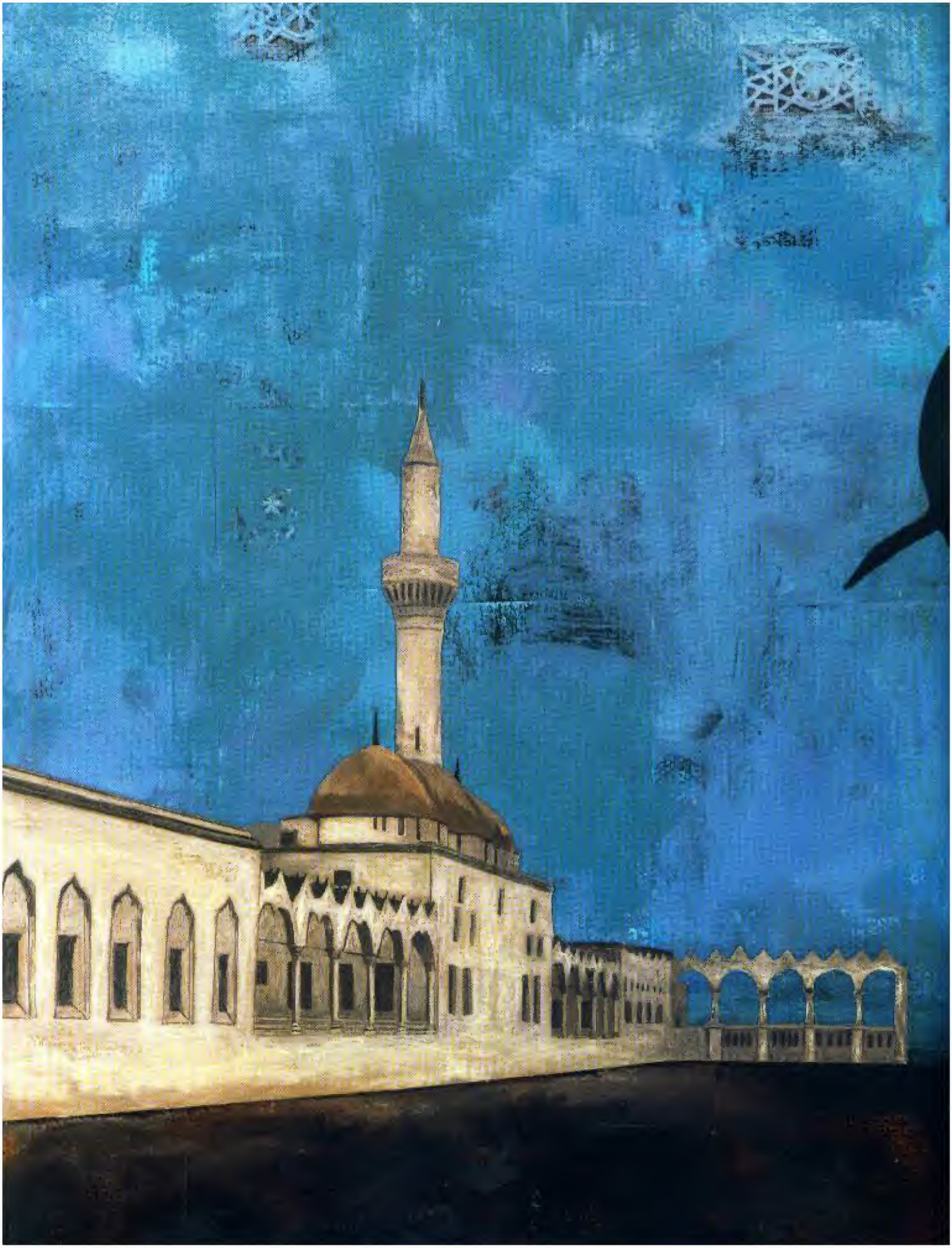

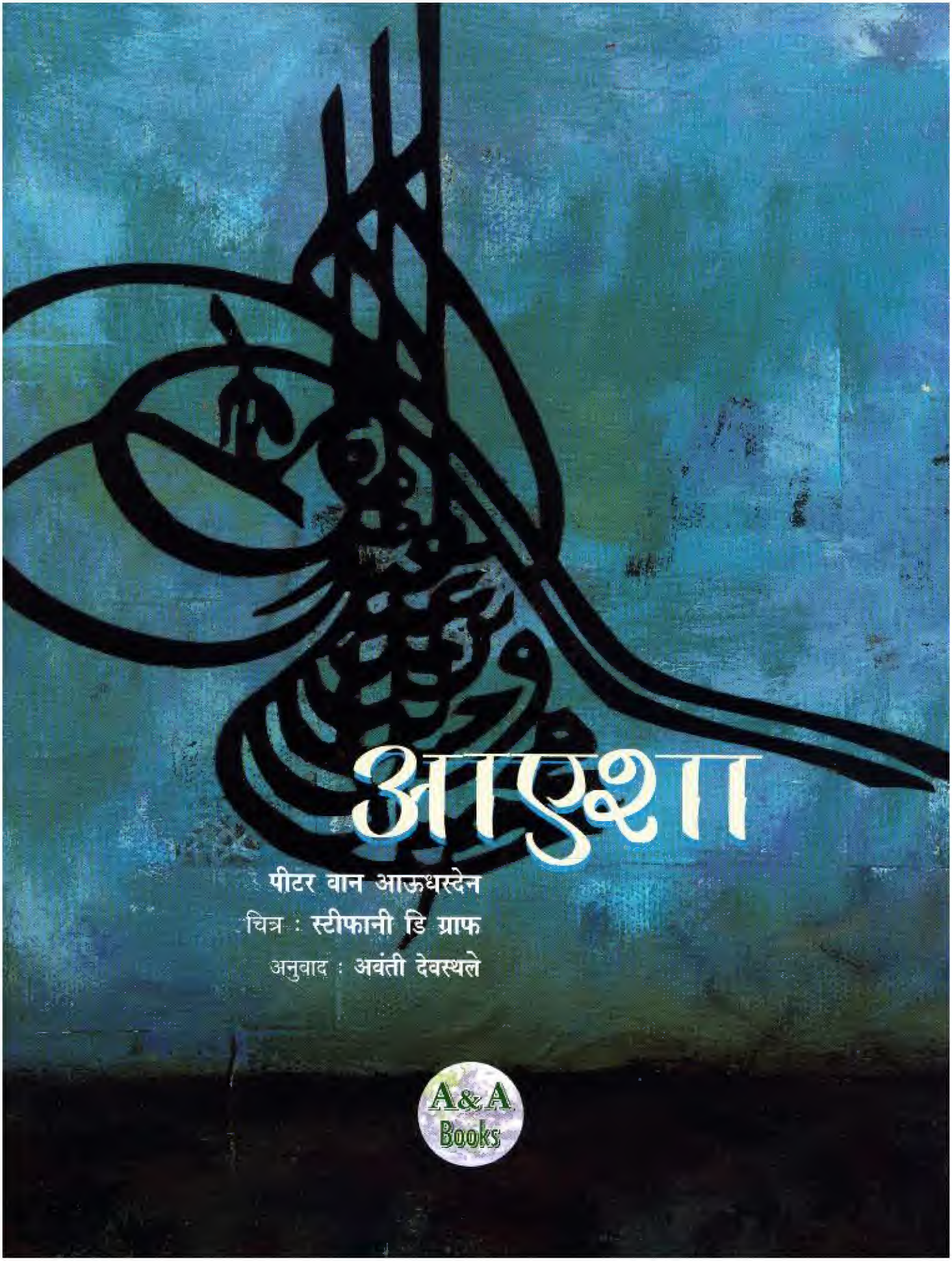

आएशा

पीटर वान आऊधस्देन

चित्र : स्टीफानी डि ग्राफ

अनुवाद : अवंती देवस्थले

A&A Books

वह महल

सुल्तान का महल सफेद है।
चमचमाता सफेद।
उसके गुंबद दोपहर की धूप में झिलमिला रहे हैं।
महल को घेरे हुए एक मोटी दीवार है।
द्वार के सामने दो सिपाही खड़े हैं।
एक आदमी उनकी ओर आता है।
वह कुछ पूछता है और उनके हाथ देता है,
पर सिपाही उसे भगा देते हैं।
आएशा देखती है कि किस तरह से सिपाही
उसे दुतकारते हैं, जैसे वह कोई कुत्ता हो।
आएशा का रहा-सहा साहस भी गायब हो जाता है।
उसे महल में कभी जाने नहीं दिया जाएगा।
वह सुल्तान से कभी बात नहीं कर पाएगी।

वह लंबा सफर

आएशा एक दीवार का सहारा लिए,
उसकी छाँव में बैठी है।
वह अपने नंगे पैरों को मलती है।
रेगिस्तान की धूल से वे काले पड़ गए हैं।
उन पर खरोंचें आई हैं, काँटों से, सूखी जड़ों से
और पहाड़ी रास्तों के नुकीले पत्थरों से।
कितने दिनों से वह सफ़र कर रही है?
शायद पाँच, या छह दिन भी हो सकते हैं।
वह पानी और खाना साथ लेकर चली थी।
अब सब खत्म हो चुका है। कल से ही।
इतने दिनों का सफर व्यर्थ हो गया।
"नहीं," वह खुद से कहती है।
"ऐसा नहीं हो सकता।"
उसका संदेश बहुत जरूरी है।
वह हार नहीं मान सकती।
जब वह अपने लक्ष्य के इतने करीब है।

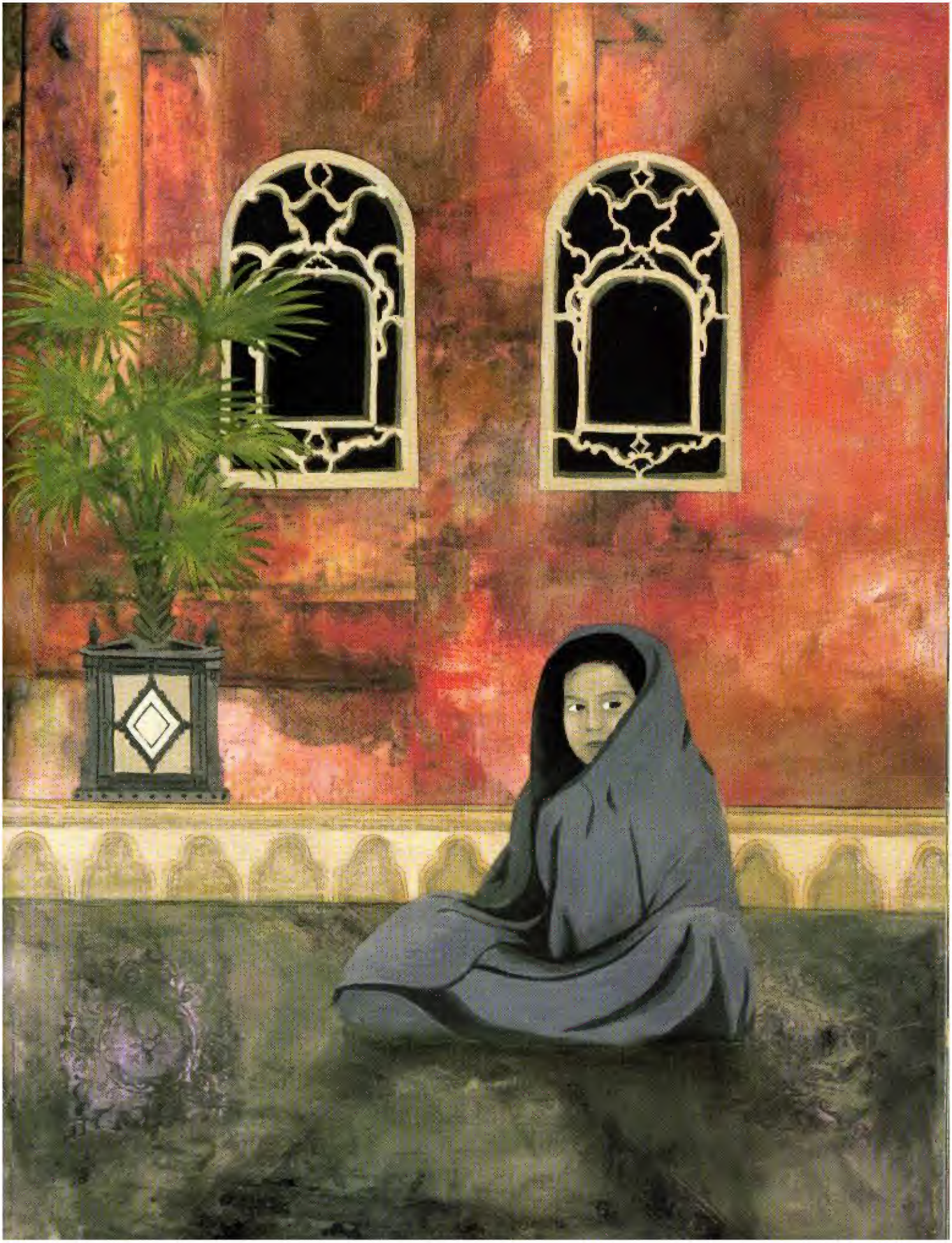

वह आदमी

महल की दीवार के एक ओर से दरवाजा खुलता है।
एक आदमी बाहर आता है।
यह जरूर सुल्तान का नौकर होगा, आएशा सोचती है।
सुल्तान के लिए कितने आदमी काम करते होंगे?
दर्जनों, सौ से भी ज्यादा।
शायद वह खुद भी नहीं जानते होंगे।
और यह आदमी उनमें से एक है।
शायद यह सुल्तान की दाढ़ी बनाता होगा
या फिर कबूतरों को दाने डालता होगा।
या अस्तबल में काम करता होगा
या रसोई में सहायक होगा।
उसे कोशिश करनी चाहिए।
वह उठ कर उस आदमी की ओर चल देती है।

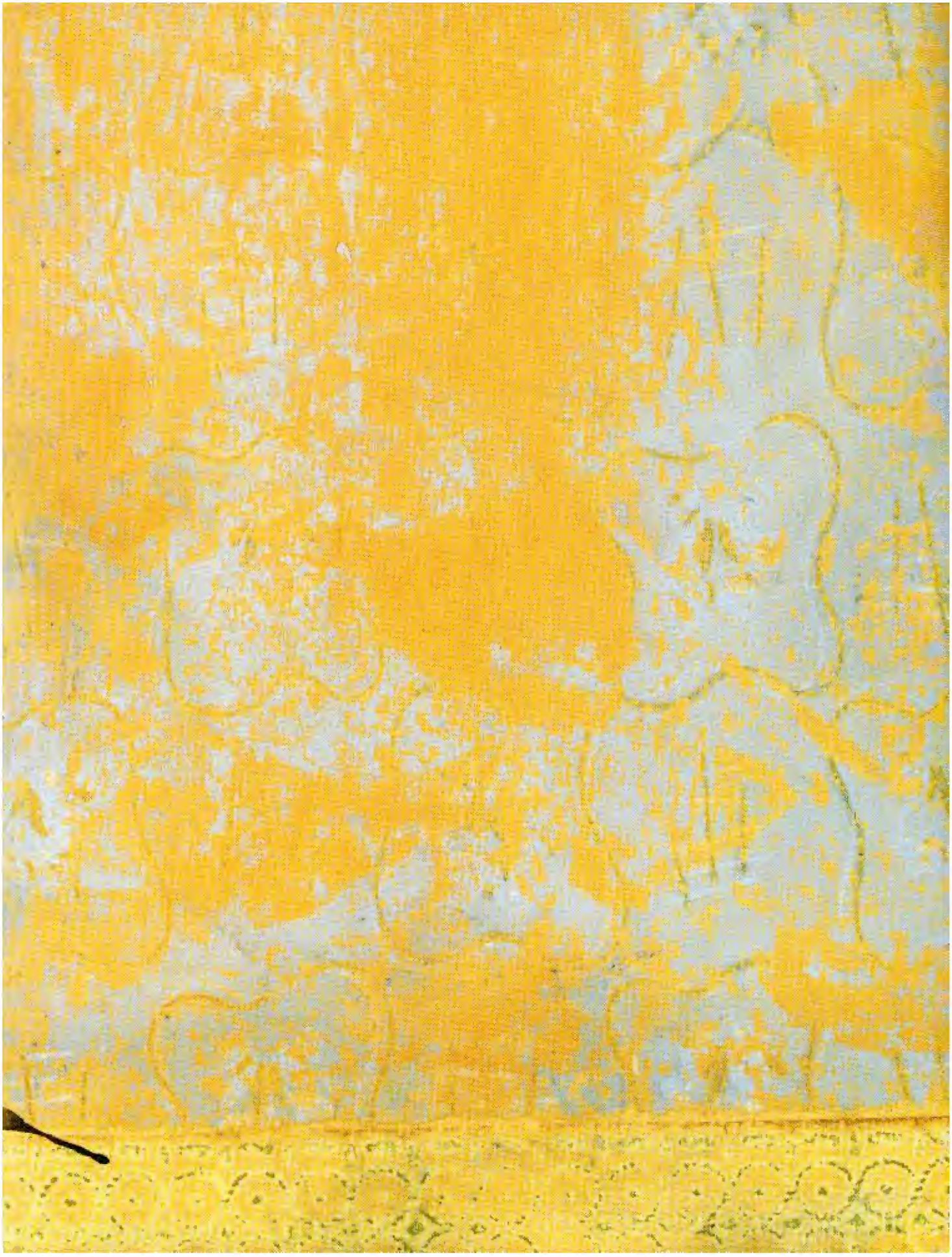

सौ साल में भी नहीं

वह आदमी उसे आश्चर्य से देखता है।
वह आएशा का सवाल दोहराता है :
"क्या सुल्तान घर पर हैं?
तुम क्यों जानना चाहती हो?"
"मुझे उनसे बात करनी है," आएशा कहती है।
"मैं बहुत दिनों से सफर कर रही हूँ।
केवल वे ही मेरी मदद कर सकते हैं।"
"तुम गलत वक्त पर आई हो," उस आदमी ने कहा।
"आलमपनाह अभी-अभी महल से गए हैं
और ऐसा किसने कहा कि तुम जैसी
मामूली लड़की के लिए उनके पास वक्त है?
उन्हें बहुत सारी, ज्यादा जरूरी चीजों की चिंताएँ हैं।"
आएशा अपने पैरों को देखती है।
"आप कहते हैं तो...
रास्ते में लोग मुझे सावधान कर रहे थे।
'मत जाओ,' वे बोले।
'लौट जाओ।
अपना वक्त बरबाद कर रही हो।
नामुमकिन चीज की उम्मीद कर रही हो।
कोई मौका नहीं है तुम्हारे पास।
क्योंकि सुल्तान तुम्हारी बात कभी नहीं सुनेंगे।
सौ साल में भी नहीं।'"

सलाहकार और रेस के घोड़े

"सुल्तान को," वह बोला,
"केवल दौलत और सत्ता से मतलब है।
तुम जैसों के लिए वे बहुत व्यस्त हैं।
वे व्यस्त हैं अपनी सेना के अफसरों के साथ,
जिन्हें खाली बैठना पसंद नहीं है।
अपने सलाहकारों के साथ,
जो अच्छी तरह जानते हैं कि वे क्या सुनना चाहते हैं।
अपने सुंदर रेस के घोड़ों के साथ।
वे दिन-रात काम करते हैं।
उन्हें देश चलाना है।
उन्हें जंग पर जाना है।
कितना कुछ करना होता है उन्हें।"

"उनके देशवासी, हाँ,
वे भी मेहनत करते हैं।
लेकिन वे गरीब ही रहते हैं।
उनकी गुलामी की वजह से केवल एक अमीर होता है,
जो हैं सुल्तान।
उसके बदले में वे लोगों को भूखा रखते हैं,
जब कि, अपने मोरों को मोटे-ताजे करवाते हैं।
ऐसा ही चलता है इस देश में।"

वे भिखारी

"मीलों दूर से आते हैं, लोग उनके दरबार में :
मशहूर गायक, गीतकार और कवि।
सुल्तान उन्हें सुनते हैं।
लेकिन जब लोग शिकायत करते हैं कि कुछ ठीक नहीं चल रहा,

वे बहरे होने का नाटक करते हैं।
वे सबसे महंगे कालीन बुनवाते हैं,
खुद को सोने-चाँदी से घेरे रखते हैं,
पर अपने देश की गरीबी की ओर
वे ध्यान नहीं देते।
हर सड़क के सभी कोनों पर भिखारी बैठे हैं।

बीमार, कमजोर, बूढ़े।
लंगड़े या अंधे।
पैरों के बिना पुरुष।
बेघर महिलाएँ।

बिना माँ-बाप के बच्चे।
सुल्तान को ये सब दिखाई नहीं देते।
वे अपनी सौ बीवियों के साथ व्यस्त हैं।
वे सब ऊब जाती हैं।
वे सब उनका ध्यान अपनी ओर खींचती हैं।
नहीं, मुझे नहीं लगता कि सुल्तान
एक सुखी इंसान हैं।"

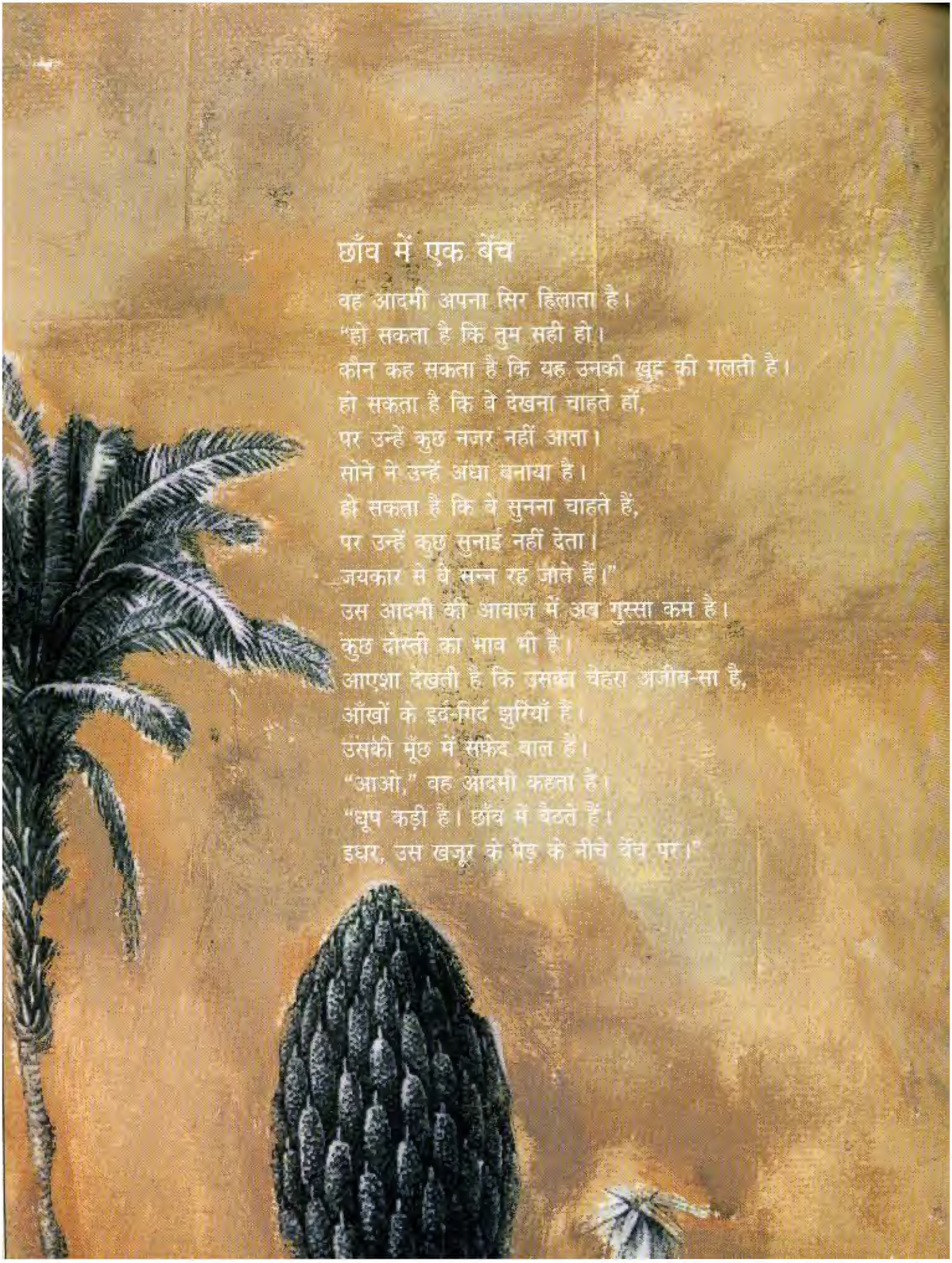

छाँव में एक बेंच

वह आदमी अपना सिर हिलाता है।
"हो सकता है कि तुम सही हो।
कौन कह सकता है कि यह उनकी खुद की गलती है।
हो सकता है कि वे देखना चाहते हों,
पर उन्हें कुछ नजर नहीं आता।
सोने ने उन्हें अंधा बनाया है।
हो सकता है कि वे सुनना चाहते हैं,
पर उन्हें कुछ सुनाई नहीं देता।
जयकार में वे सन्न रह जाते हैं।"
उस आदमी की आवाज में अब गुस्सा कम है।
कुछ दोस्ती का भाव भी है।
आएशा देखती है कि उसका चेहरा अजीब-सा है,
आँखों के इर्द-गिर्द झुर्रियाँ हैं।
उसकी मूँछ में सफेद बाल हैं।
"आओ," वह आदमी कहता है।
"धूप कड़ी है। छाँव में बैठते हैं।
इधर, उस खजूर के पेड़ के नीचे बेंच पर।"

सारी जिंदगी एक महल में

"क्या आप महल में काम करते हैं?" आएशा ने पूछा।
वह आदमी सिर हिलाता है।
"मेरी पूरी जिंदगी।
जब से मैं छोटा था। तुमसे भी छोटा।"
"ओह," आएशा कहती है,
"तो आपने उन्हें एक बार जरूर देखा होगा।
मेरा मतलब, सुल्तान को।"
"जरूरत से ज्यादा," वह आदमी बोला।
"कैसे हैं वे दिखने में?"
वह आदमी मुस्कुराया।
"दिल से कहूँ तो वे बड़े साधारण-से हैं।
तुम्हारी या मेरी तरह।
कम से कम, मुझे तो ऐसा ही लगता है।
पर मुझे बताओ, तुम उन्हें क्या पूछना चाहती हो?
मैं तुम्हारा संदेश उन तक पहुँचा सकता हूँ,
अगली बार मिलने पर।
कौन जाने, शायद वे मेरी बात सुन लें।"

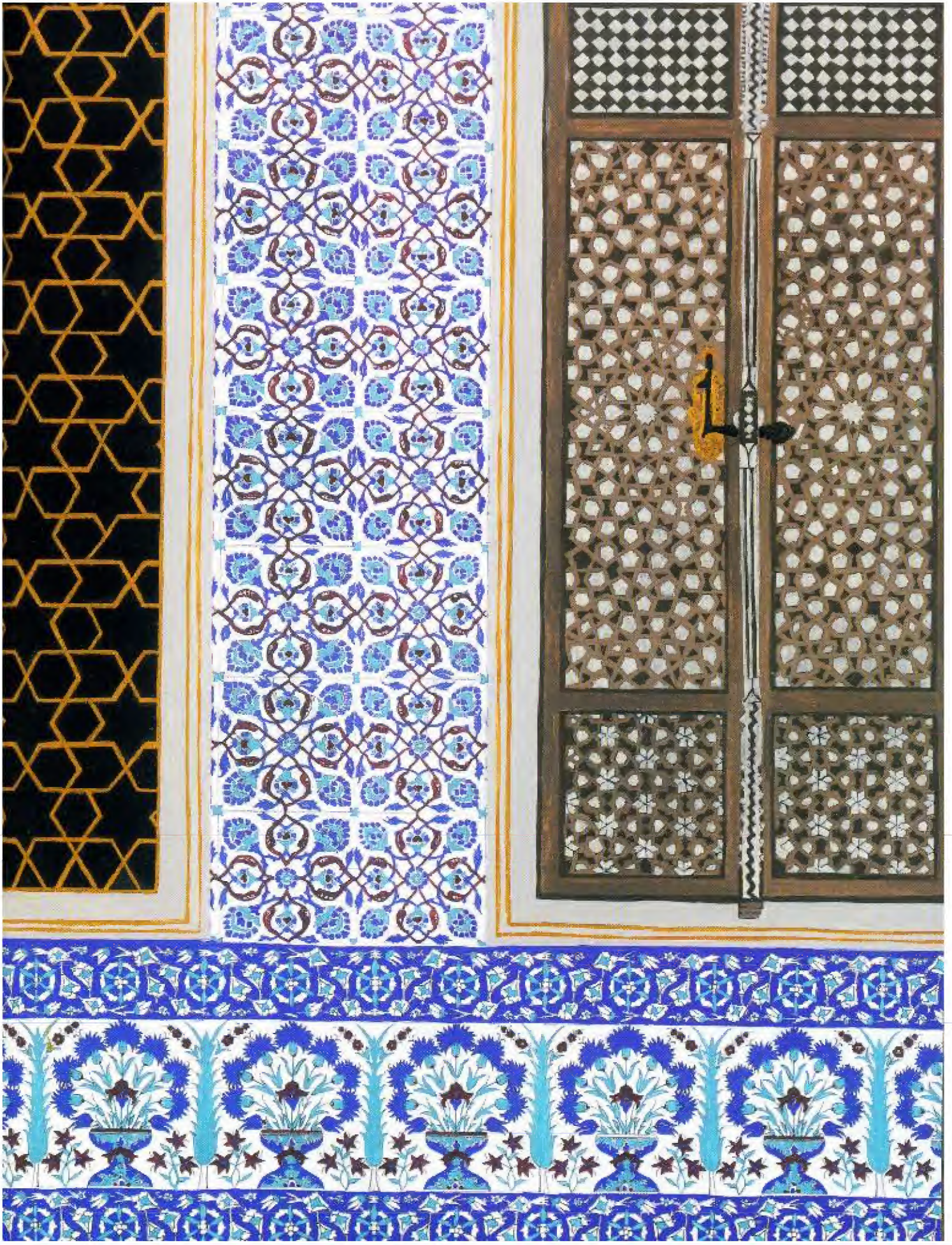

मैं सुल्तान जैसा नहीं हूँ

आएशा कि आँखें चमक उठीं।
"क्या आपको सच में ऐसा लगता है?"
"उम्मीद तो करता हूँ। बताओ।"
"माफी चाहती हूँ," आएशा ने कहा।
"मैं आपकी मदद के लिए पैसे नहीं दे पाऊँगी।"

उस आदमी ने सिर हिलाकर मना किया।
"मुझे गरीब लोगों की तकलीफों से
पैसे नहीं बनाने हैं।
मैं सुल्तान जैसा नहीं हूँ।
क्या तुम लंबा सफर तय करके आई हो?"

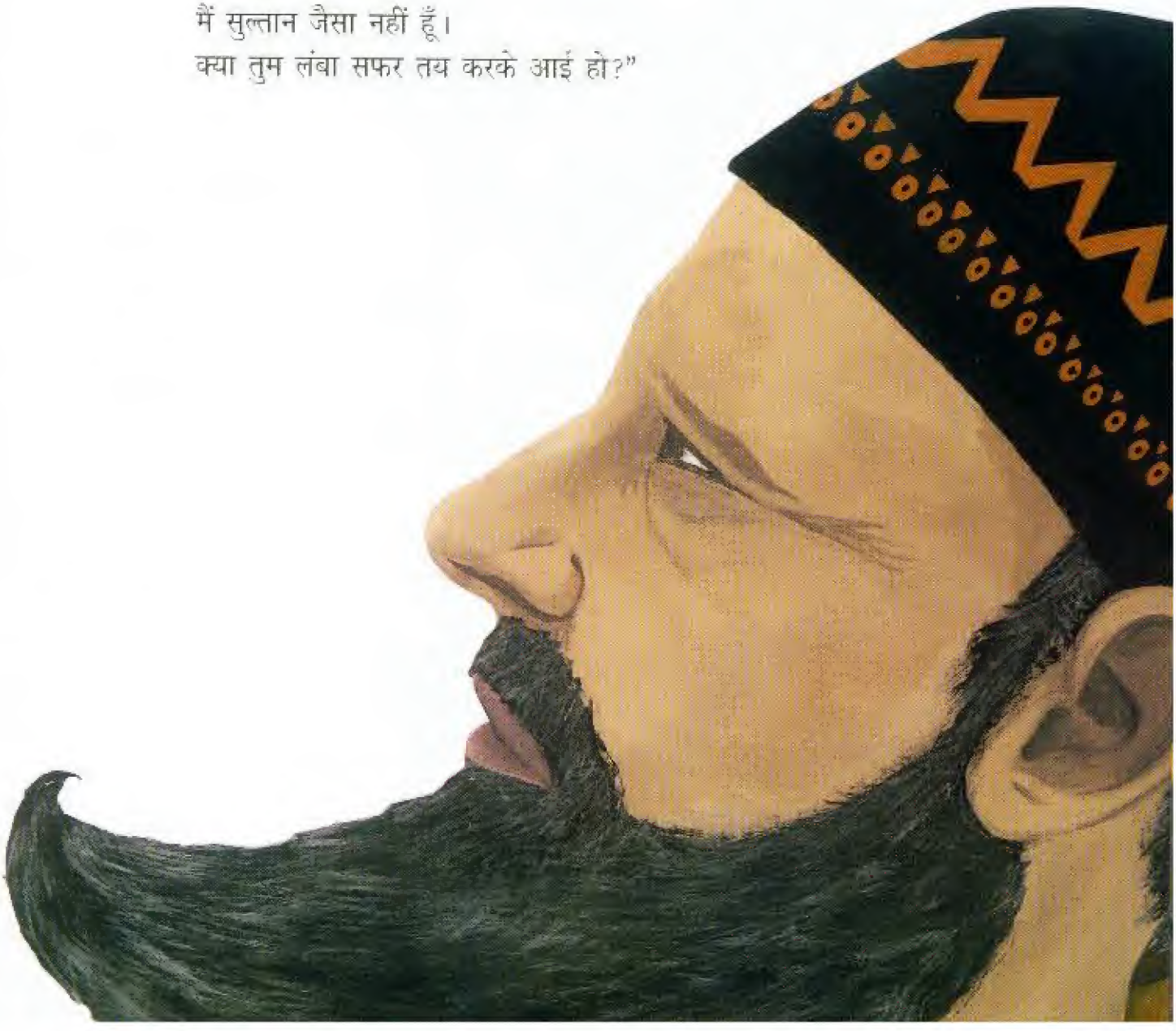

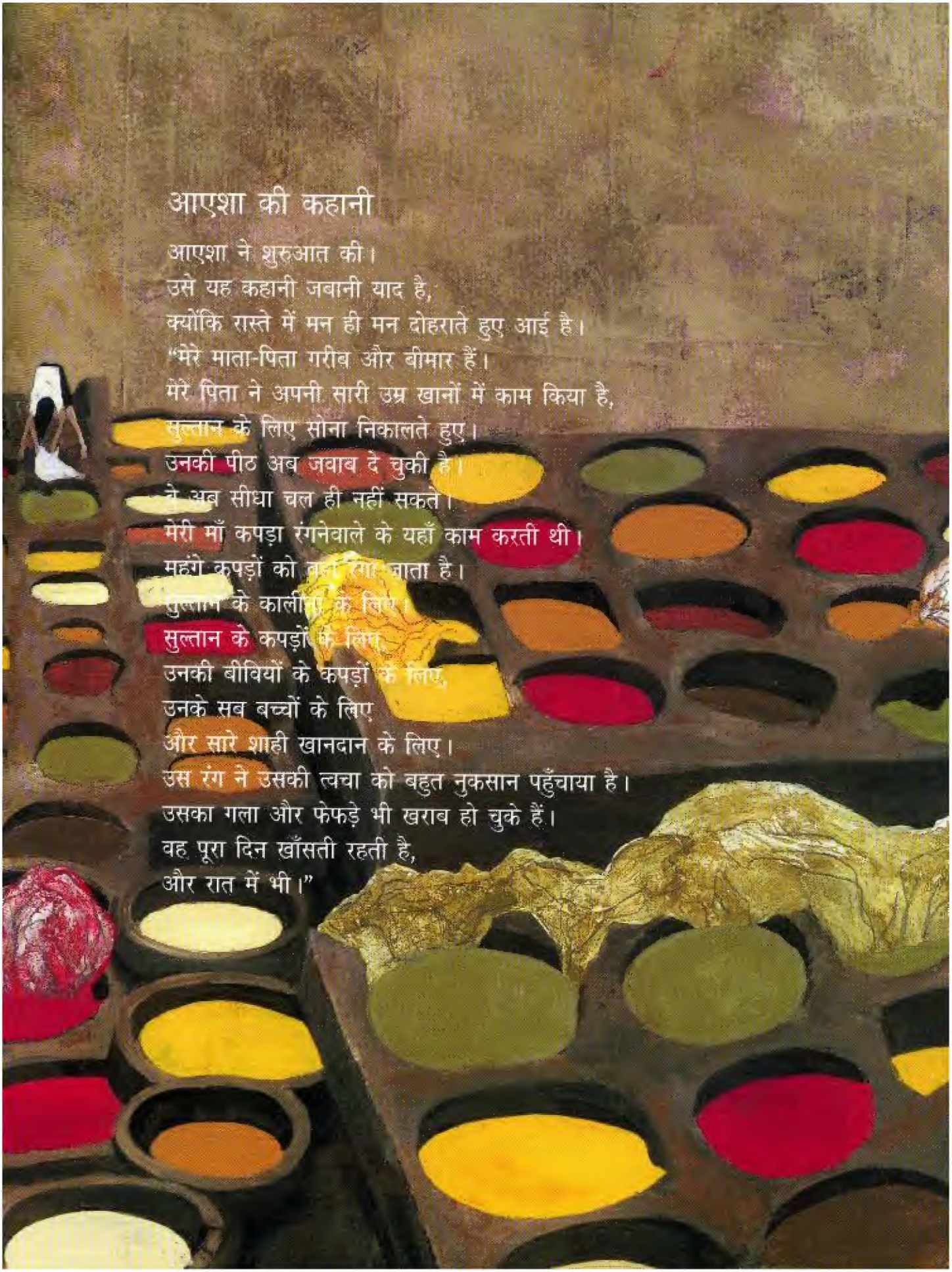

आएशा की कहानी

आएशा ने शुरुआत की।
उसे यह कहानी जबानी याद है,
क्योंकि रास्ते में मन ही मन दोहराते हुए आई है।
"मेरे माता-पिता गरीब और बीमार हैं।
मेरे पिता ने अपनी सारी उम्र खानों में काम किया है,
सुल्तान के लिए सोना निकालते हुए।
उनकी पीठ अब जवाब दे चुकी है।
वे अब सीधा चल ही नहीं सकते।
मेरी माँ कपड़ा रंगनेवाले के यहाँ काम करती थी।
महंगे कपड़ों को लाल रंग जाता है।
सुल्तान के कालीनों के लिए।
सुल्तान के कपड़ों के लिए,
उनकी बीवियों के कपड़ों के लिए,
उनके सब बच्चों के लिए
और सारे शाही खानदान के लिए।
उस रंग ने उसकी त्वचा को बहुत नुकसान पहुँचाया है।
उसका गला और फेफड़े भी खराब हो चुके हैं।
वह पूरा दिन खाँसती रहती है,
और रात में भी।"

सबसे बड़ा भाई

"सिपाही मेरे सबसे बड़े भाई को ले गए।
उसका नाम रशीद है।
वह तगड़ा नौजवान था और हँसता रहता था।
जब माँ और पिता बीमार थे,
वह हमारे परिवार के लिए कमाता था।
अब वह सुल्तान की सेना में लड़ाईयाँ लड़ता है,
उत्तरी पहाड़ों के आदिवासियों के खिलाफ।
या फिर और कहीं, हमें नहीं पता।
दो साल से हमें उसकी कोई खबर नहीं मिली।
हम तो यह भी नहीं जानते कि वह जिंदा भी है या नहीं
या हम उसे फिर कभी देख पाएँगे या नहीं।
मैं काम पर नहीं जा सकती।
मुझे माता-पिता की देखभाल करनी है।
मैं उनका खाना पकाती हूँ,
उनके कपड़े और चादरें धोती हूँ
और घर की सफाई करती हूँ।
उन्हें इस वक्त मेरी कमी महसूस नहीं हो रही होगी
क्योंकि मेरा सबसे छोटा भाई हाफिद उनके साथ है।
दरअसल, मैं उसी के लिए यहाँ आई हूँ।"

सबसे छोटा भाई

"मैं उम्मीद लेकर आई हूँ
कि सुल्तान उसे नौकरी देंगे।
हाफिद न कुछ बोलता है न सुनता है,
लेकिन वह घोड़ों से बातें कर सकता है।
वह उन्हें ज्यादा अच्छी तरह समझता है,
इंसानों से भी ज्यादा।
जिद्दी से जिद्दी घोड़ा भी
उसके हाथों की बात मानता है।
कोई नहीं जानता
कि वह कैसे कर पाता है।
वह खुद भी नहीं।
अगर उसके पास नौकरी होती,
तो वह पैसे कमा पाता।
हमारे माता-पिता और मेरे लिए।
और अपने लिए भी।
अगर वह पैसे बचा पाए,
तो कोई लड़की देखकर शादी कर पाएगा।
वह खुश रह पाएगा।
भले ही वह कभी कुछ न बोले।
आपको क्या लगता है,
क्या आप हमारी मदद कर सकेंगे?"

शहद के केक

वह आदमी उठ खड़ा हुआ।
"क्या तुम कुछ खाओगी?
हाँ, तुम्हें खाना चाहिए।
तुम्हारे चेहरे पर नजर आ रहा है।"
आएशा उसके पीछे जाती है।
एक बेकरी से वह आदमी दो केक खरीदता है।
वह दोनों केक उसे दे देता है।
आएशा उसकी ओर सवाल भरी नजरों से देखती है।
वह आदमी हल्के से गरदन हिलाता है।
"खाओ।"
वह शहद और बादाम चखती है।
"अच्छा है?"
आएशा गरदन हिलाती है।
"अपना थैला मुझे दो।
मैं दुकानदार से कहता हूँ, इसे भर दे।
तुम्हारे घर तक के सफर के लिए।"

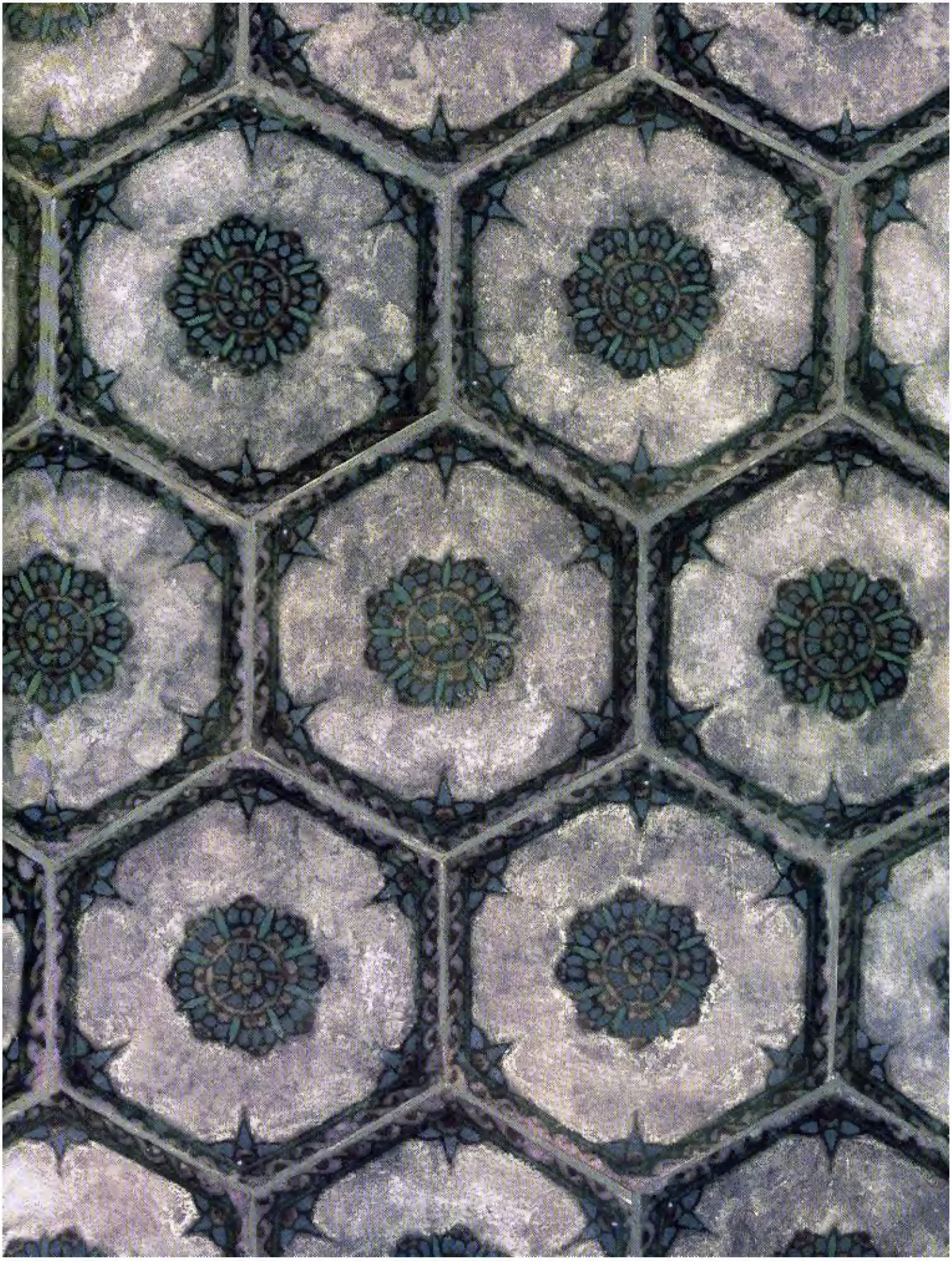

अँगूठी

उस आदमी ने अपनी उँगली से एक अँगूठी निकाली।
उसने वह आएशा के हाथ में थमाई।
"यह अँगूठी अपने भाई को देना।
वह जब महल में आए,
इसे साथ जरूर लाए।
मुझे नहीं लगता कि सुल्तान उसे वापस लौटा देंगे।
राजा अपनी प्रजा से बढ़कर नहीं होता।
देखो, तूफान के वक्त क्या होता है?
पुराना आँवले का पेड़ जमीन पर गिर जाता है,
बिजली विशालकाय बाँज के टुकड़े कर देती है,
पर घास तूफान में केवल झुकती है।
तूफान के बाद फिर उठ खड़ी होती है
जैसे कुछ हुआ ही न हो।"
राजा, महाराजा, सुल्तान...
इन सभी को
उस घास को देखना चाहिए।"

सुल्तान और प्रजा

"आपको क्या लगता है," आएशा पूछती है,
"क्या सुल्तान अच्छे आदमी हैं?"
वह आदमी हँसकर उसकी ओर देखता है।
"मैं इस बात का फैसला नहीं कर सकता।
केवल अल्लाह जानता है।
सिर्फ वही वह सब जानता है, जो लोग छिपाते हैं।
दूसरों से, खुद से।
वह सब देख सकता है, जो लोग देखना नहीं चाहते।
सुल्तान मेहनत करते हैं, हाँ करते हैं।
दिन-रात वे राजनीति में उलझे रहते हैं।
विज्ञान में, कला में।
उन्हें काफी कुछ पता है, पर उन्हें यह नहीं पता
कि उनकी प्रजा के मन में क्या चल रहा है।
लोग उनके बारे में क्या सोचते हैं।
कैसे सब उनसे डरते हैं और कोसते हैं।
फिर उस ज्ञान का क्या फायदा?
रास्तों पर, साधारण कपड़ों में
घूमने से उन्हें तकलीफ तो नहीं होगी।
या लोगों की बातें सुनने में।
यह सुनने में कि लोग उनके बारे में क्या सोचते हैं।
नहीं, इससे उन्हें कोई तकलीफ नहीं होगी।
शायद इससे वे जाग जाएँ।"

घर तक का सफर

आएशा ने अपना सिर झुकाया।
"मुझे आप जैसे किसी से मिलने की
कोई उम्मीद नहीं थी।
इतने मिलनसार, इतने समझदार।
सुल्तान को आपसे सीख लेनी चाहिए।
मैं आपकी बेहद शुक्रगुजार हूँ।"
"मुझे भी तुम्हें शुक्रिया कहना चाहिए," वह आदमी बोला।
इस बात का क्या मतलब है? भला क्यों?
हालाँकि आएशा समझ नहीं पाई, वह कुछ बोली नहीं।
उसने उस आदमी को अलविदा कहा।
उस अँगूठी को सँभाल के पकड़,
वह अपने घर की ओर चल पड़ी।
उसने यह नहीं देखा कि जब वह आदमी महल के द्वार से
अंदर गया, तो सिपाही उसे झुककर सलाम कर रहे थे!

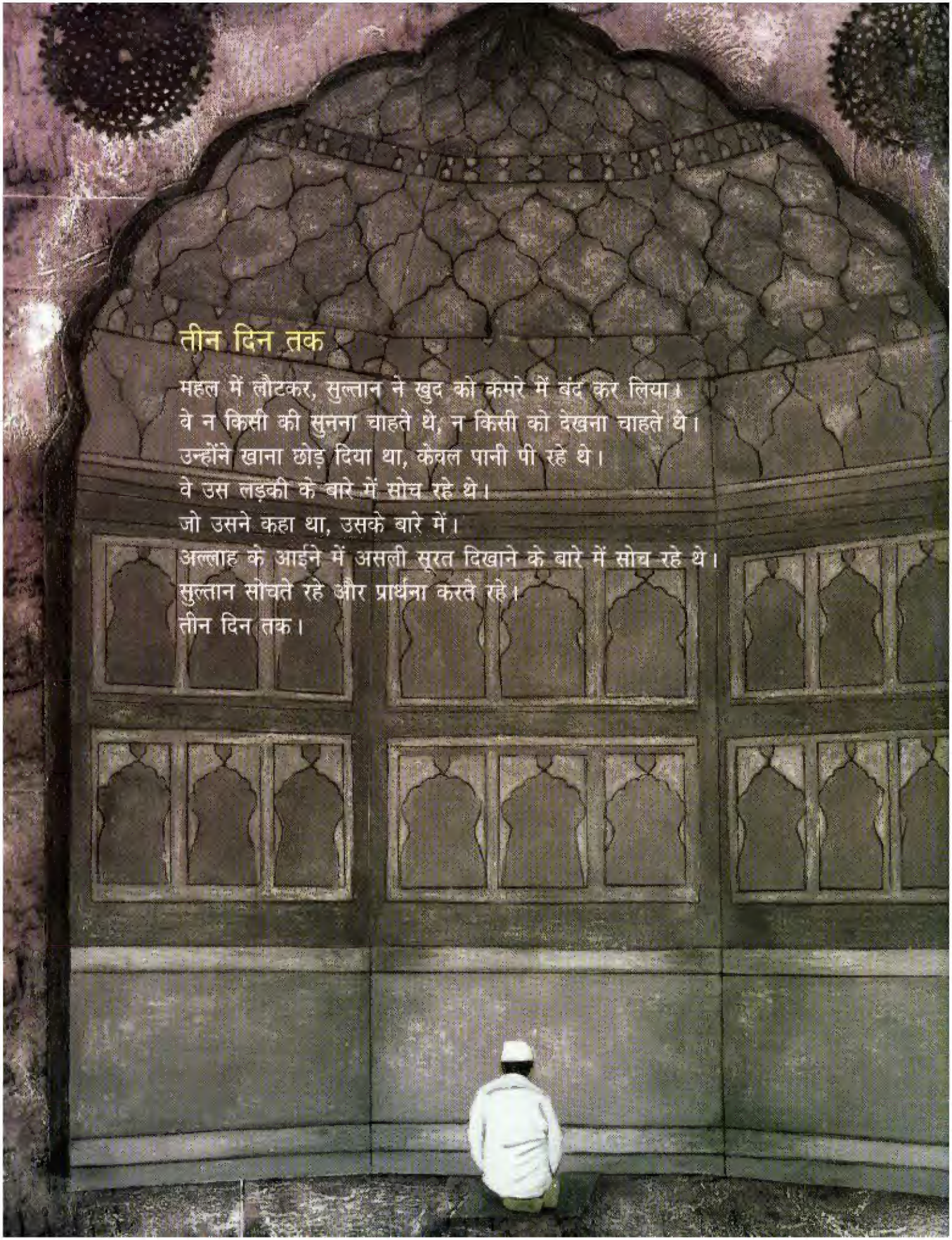

तीन दिन तक

महल में लौटकर, सुल्तान ने खुद को कमरे में बंद कर लिया।
वे न किसी की सुनना चाहते थे, न किसी को देखना चाहते थे।
उन्होंने खाना छोड़ दिया था, केवल पानी पी रहे थे।
वे उस लड़की के बारे में सोच रहे थे।
जो उसने कहा था, उसके बारे में।
अल्लाह के आईने में असली सूरत दिखाने के बारे में सोच रहे थे।
सुल्तान सोचते रहे और प्रार्थना करते रहे।
तीन दिन तक।

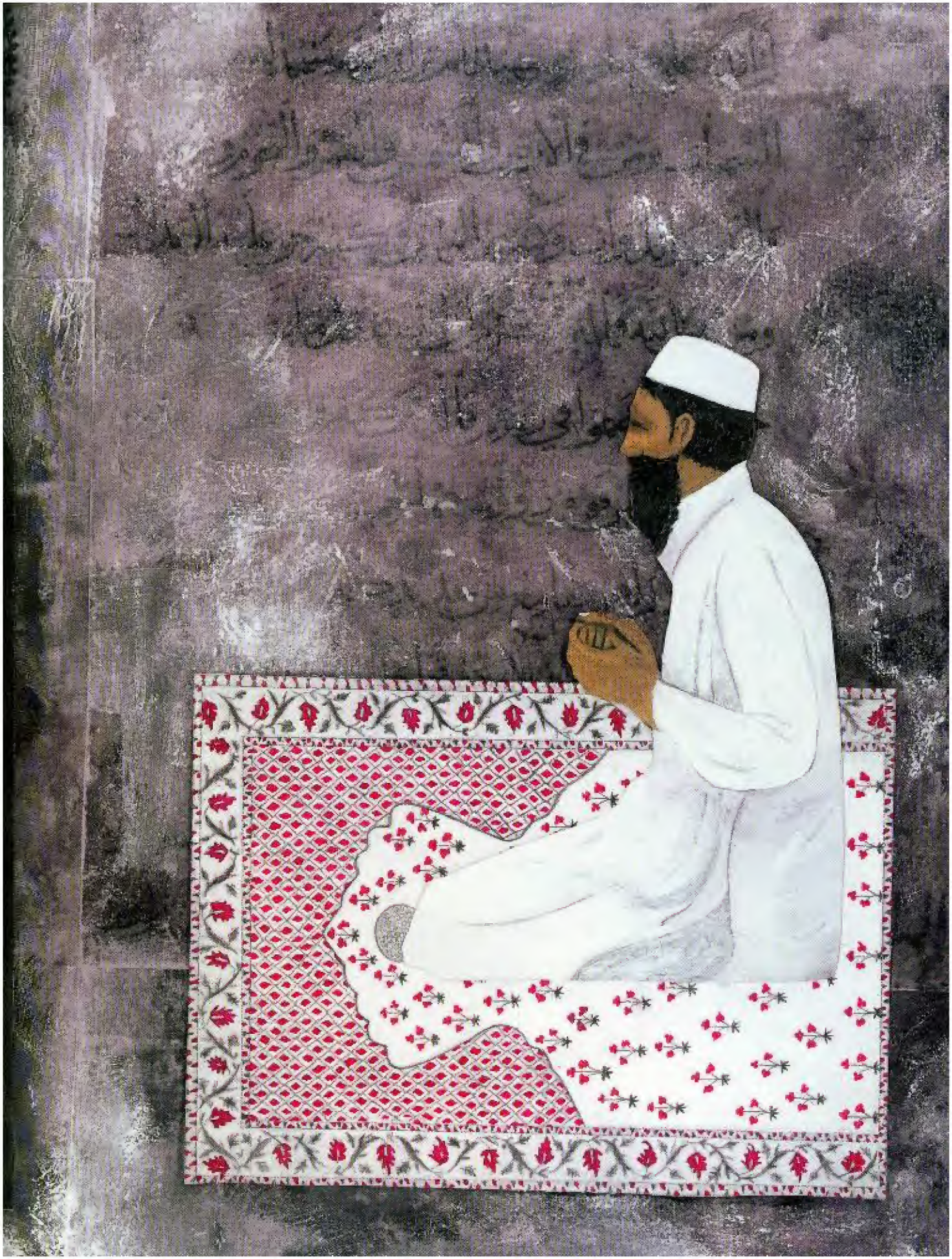

चौथा दिन

चौथे दिन सुल्तान बोले :
"इस महल में बहुत कुछ बदलना है।
मैं उन्हें निकाल रहा हूँ। उन सबको।
झुकने वाले, तारीफ करने वाले,
कसीदे गाने वाले और भविष्य बताने वाले,
नाचने वाले और करामाती।
जाओ, दूर हो जाओ मेरी नजरों से!
उनका मेरे महल में अब कभी स्वागत नहीं होगा।
हटो, मीठी रोटी बनाने वाले, इत्र और सुगंधी के व्यापारी,
हर उस चीज के व्यापारी जो महंगी और बेकार है।
चले जाओ, रिश्तेदारों, जो मेरे पैसों पर जी रहे हो,
शिकायत करने वालों, जो कभी खुश नहीं होते।
अब यहाँ के दरवाजे खटखटाने की जरूरत नहीं।
इन सब के लिए मेरे दरवाजे हमेशा के लिए बंद हो गए हैं।"

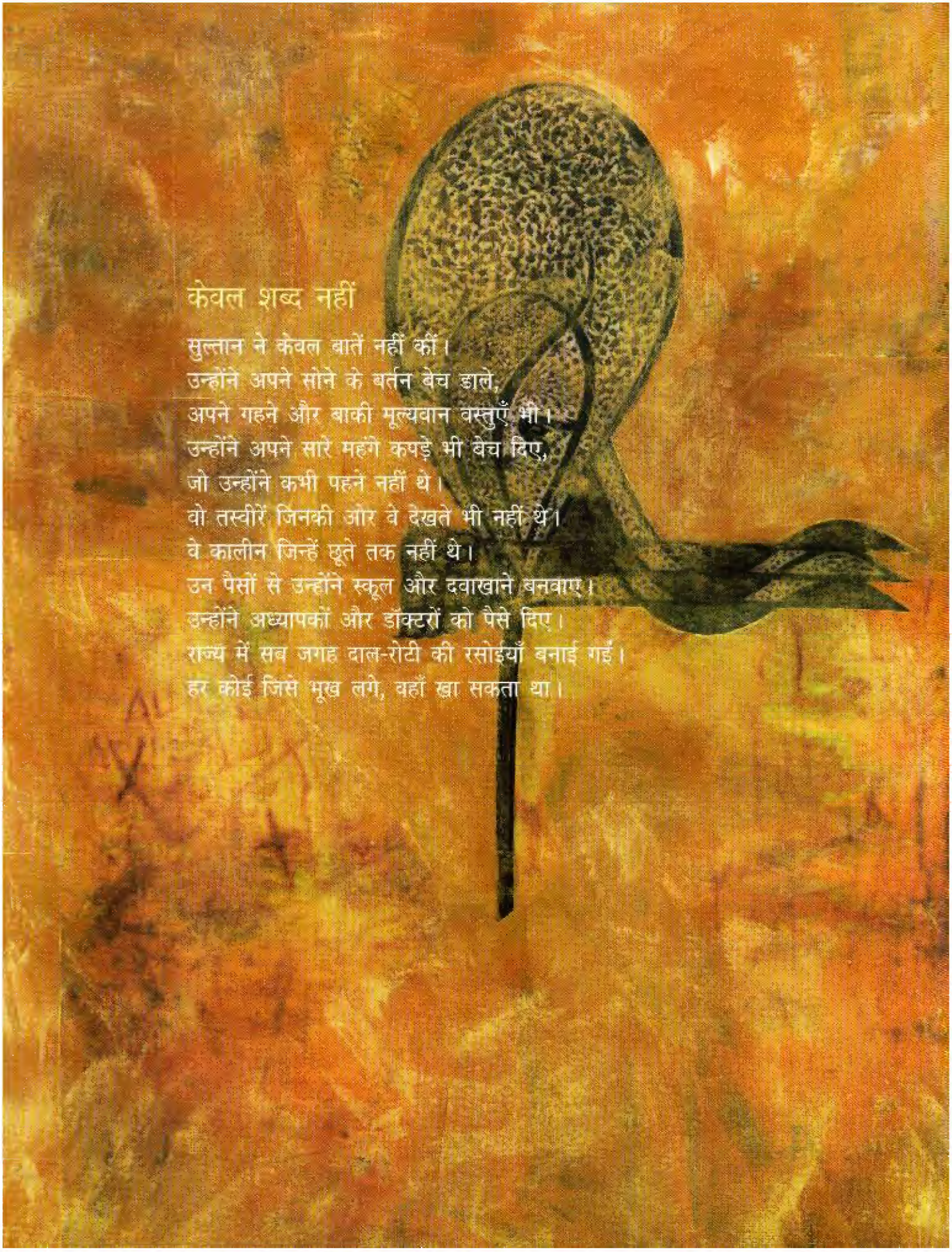

केवल शब्द नहीं

सुल्तान ने केवल बातें नहीं कीं।
उन्होंने अपने सोने के बर्तन बेच डाले,
अपने गहने और बाकी मूल्यवान वस्तुएँ भी।
उन्होंने अपने सारे महंगे कपड़े भी बेच दिए,
जो उन्होंने कभी पहने नहीं थे।
वो तस्वीरें जिनकी ओर वे देखते भी नहीं थे।
वे कालीन जिन्हें छूते तक नहीं थे।
उन पैसों से उन्होंने स्कूल और दवाखाने बनवाए।
उन्होंने अध्यापकों और डॉक्टरों को पैसे दिए।
राज्य में सब जगह दाल-रोटी की रसोइयाँ बनाई गईं।
हर कोई जिसे भूख लगे, वहाँ खा सकता था।

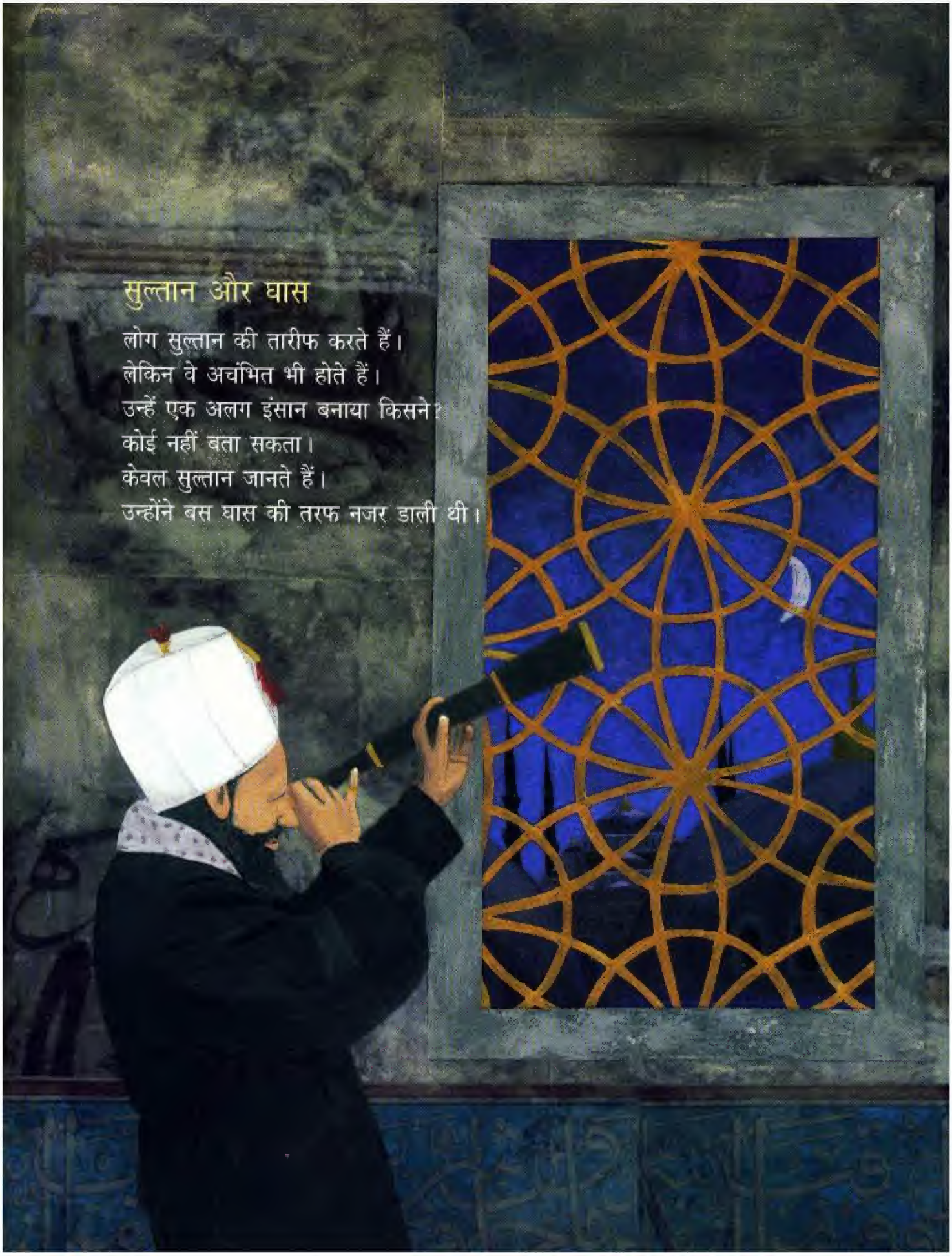

सुल्तान और घास

लोग सुल्तान की तारीफ करते हैं।
लेकिन वे अचंभित भी होते हैं।
उन्हें एक अलग इंसान बनाया किसने?
कोई नहीं बता सकता।
केवल सुल्तान जानते हैं।
उन्होंने बस घास की तरफ नजर डाली थी।

The translation and production of this book are funded by the

Flemish Literature Fund
(Vlaams Fonds voor de Letteren - www.flemishliterature.be)

"Aisja" by *Pieter van Oudheusden & Stefanie De Graef*
First published in Belgium in 2009 by
Uitgeverij De Eenhoorn bvba, Wielsbeke

Copyright © 2009 Uitgeverij De Eenhoorn bvba, Vlasstraat 17, B-8710 Wielsbeke
Hindi translation copyright © 2012 A&A Books, Gurgaon
All rights reserved

First Hindi edition: September 2012

Published by A&A Books, C1-324 Palam Vihar, Gurgaon 122017, India
www.aabooktrust.org

Printed at Pohoja Print Solutions Pvt. Ltd., Delhi 110092, India

ISBN 978-93-80141-46-6

₹ 80

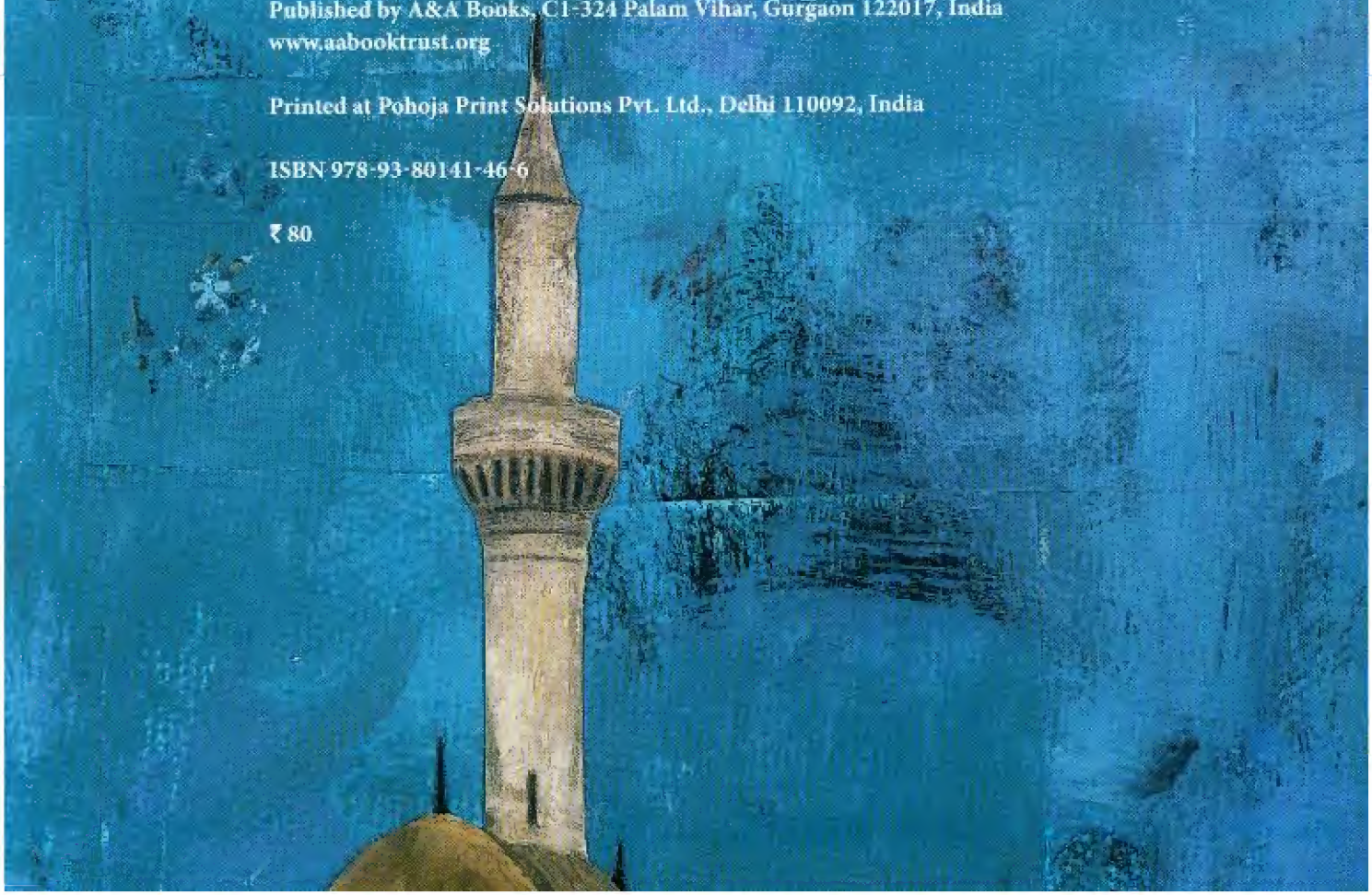

आएशा एक छोटी-सी आम लड़की है। उसे सुल्तान को बहुत कुछ बताना है :
अपनी मुसीबतों के बारे में, उनके राज्य में जो गलत चल रहा है, उसके बारे में...
यह कड़वी-सच्ची बातें उन्हें बताने की हिम्मत कोई नहीं रखता।
क्या आएशा पहुँच भी पाएगी सुल्तान के पास...

कहानी सीधे-सच्चेपन की, उम्मीदों की,
अपने लोगों से प्यार करने वाले सुल्तान की।

आएशा हमसे मिलने आई है बेल्जियम से।
वाह, आएशा, वाह!!

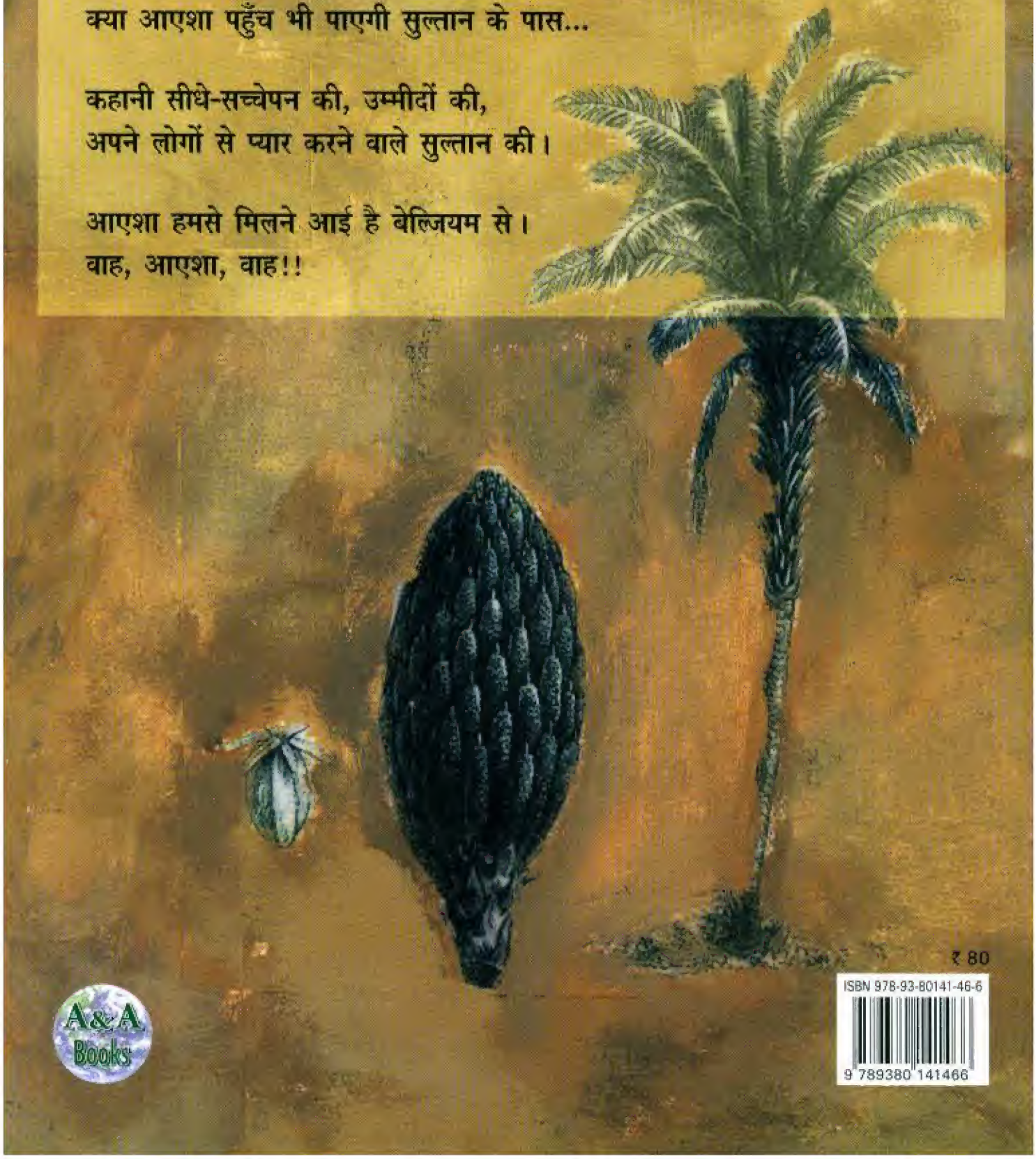

₹ 80

ISBN 978-93-80141-46-6

A&A Books